CHAPTER 8

बारहमासा

PAGE 51, प्रश्न और अभ्यास

12:1:8:प्रश्न और अभ्यास:1

अगहन मास की विशेषता बताते हुए विरहिणी (नागमती) की व्यथा-कथा का चित्रण अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर - अगहन मास में दिन छोटे और रातें लंबी हो जाती हैं। यह परिवर्तन नागमती के लिए बहुत ही कष्टप्रद है। दिन तो किसी तरह से काट जाता है परन्तु रात में उसे अपने प्रिय की याद आती है। उसकी यह वेदना बहुत ज्यादा होती है क्योँकि वो घर में अकेली है। उसकी स्थिति रात भर दीपक में जलने वाले बाती की तरह हो गयी है। जैसे बाटी रात भर जलती है वैसे वो भी रात भर विरह अग्नि में जलती रहती है। ठण्ड उसके ह्रदय को कंपा देता है। वह सोचती यदि उसका प्रिय उसके साथ होती तो यह ठंडी सहन कर लेती। परन्तु विरह के कारण यह ठंडी भी दोगुनी हो गयी है। प्रिय की

अनुपस्थिति में श्रृंगार करना भी नागमती को कष्टप्रद लगता है। विरह की अग्नि उसे अंदर ही अंदर जलाती है। बाहर की ठण्ड का कोई भी प्रभाव उसे विरह अग्नि पर नहीं होता है।

12:1:8:प्रश्न और अभ्यास:2

'जीयत खाइ मुएँ नहिं छाँड़ा' पंक्ति के संदर्भ में नायिका की विरह-दशा का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर - नागमती के पति के वीटोग की तुलना इस पंक्ति में बाज़ से की गयी है। जिस प्रकार बाअज़ अपने भोजन को नोच नोच कर खाता है उसी प्रकार ये वियोग भी नागमती को नोच नोच कर खाता जाता है। जैसे बाज़ अपने शिकार पे नज़र गढ़ाए बैठा रहता है उसी प्रकार वियोग भी उसके ऊपर नज़र गड़ा के बैठा है। वियोग प्रत्यक्ष रूप से नज़र नहीं आता है परन्तु उसे अप्रत्यक्ष रूप से खा रहा है।

12:1:8:प्रश्न और अभ्यास:3

माघ महीने में विरहिणी को क्या अनुभूति होती है?

उत्तर - माघ के महीने में ठंड अपने चरम पे रहती है। चारों ओर कोहरा छाने लगता है। यह स्थिति विरहिणी के लिए कष्टप्रद है। इसमें विरह की पीड़ा मृत्यु के समान है। अगर पति लौट के नहीं आया तो यह ठण्ड उसे खा जाएगी। माघ के महीने में उसके मन काम की भावना उत्पन्न होती है। प्रिय से मिलने की उसकी व्याकुलता बढ़ती जाती है। माघ मास की बारिश उसके विरह को बढ़ा देती है। बारिश में भीगे हुए गीले कपड़े और आभूषण तीर की तरह चुभ रहे हैं। उसे श्रृंगार अच्छा नहीं लगता है। उसे एहसास होता है कि इस विरह अग्नि में जल कर उसका शरीर राख की तरह उड़ जायेगा।

PAGE 52

12:1:8:प्रश्न और अभ्यास:4

वृक्षों से पत्तियाँ तथा वनों से ढाँखें किस माह में गिरते हैं? इससे विरहिणी का क्या संबंध है?

उत्तर -

फागुन मास के समय वृक्षों से पत्तियाँ तथा वनों से ढाँखें गिरते हैं। यह महीना विरहिणी के लिए बहुत कष्टदायक है। चारों ओर गिरने वाली पत्तियाँ उसे उसकी टूटी हुई आशा की तरह लगती हैं। प्रियतम के घर उमींद हर गिरते हुए पत्ते के साथ धूमिल हो जाती है। उसके शररीर पीला हो गया है जो पेड़ो से गिरे हुए सूखे पत्तो की तरह है। जैसे-जैसे पत्तियाँ अपने जीवन के अंत में पीली होती जाती हैं, वैसे-वैसे प्रियतम के विरह अग्नि में जलती नायिका का रंग पीला होता जा रहा है। इसलिए, फागुन माह उसके दुख को शांत करने की जगह बढ़ा रहा है। फागुन के अंत के साथ ही बसंत आ जाएगी। जिसमे पेड़ो पर नए पत्ते आ जायेंगे और बाहर के वातावरण में बहार आ जाएगी। परन्तु नागमती के जीवन में सुख का पुनः आगमन कब होगा यह कहना संभव नहीं है।

12:1:8:प्रश्न और अभ्यास:5

निम्नलिखित पंक्तियों की व्याख्या कीजिए-

(क) पिय सौं कहेहु सँदेसड़ा, ऐ भँवरा ऐ काग।
सो धनि बिरहें जरि मुई, तेहिक धुआँ हम लाग।

(ख) रकत ढरा माँसू गरा, हाड़ भए सब संख।

धिन सारस होई ररि मुई, आइ समेटहु पंख।

(ग) तुम्ह बिनु कंता धनि हरुई, तन तिनुवर भा डोल।
तेहि पर बिरह जराई कै, चहै उड़ावा झोल।।

(घ) यह तन जारौं छार कै, कहौं कि पवन उड़ाउ।
मकु तेहि मारग होई परौं, कंत धरैं जहँ पाउ।।

उत्तर -

(क) इस पंक्ति का अर्थ यह है की दुखी नागमती भौरों और कौवो को सम्बोधित करते हुए कहती है कि विरह की अग्नि में जलकर उसकी जो हालत हुयी है उसकी सुचना उसके प्रियतम तक पहुंचा दे। वह कहती है की हे भौरें और कौवे इस विरह की अग्नि में जल कर मेरी स्थिति बहोत ख़राब हो गयी है। इस अग्नि के धुएं से मेरा रूप भी काला हो गया है।

(ख) इस पंक्ति में नागमती अपनी विरह की दशा का वर्णन अपने प्रियतम से कर रही है। वह कहती है आपके वियोग में मेरी दशा बहोत ही खराब हो गयी है। मैं इतना रोती हूँ की मेरे राखत अब आंसू की जगह बहते है। आपकी की तड़प में

मेरा शरीर गाल चूका है और हड्डियां शंख के समान स्वेत हो गयी है। वह कहती है की आपके वियोग में मैं सारसो की भांति मर रही हूँ आप आकर मेरे पंख समेट लीजिये।

(ग) प्रस्तुत पंक्तियों में नागमती कहती है- प्रियतम मैं आपके वियोग में सुख कर तिनके की भांति हो रही हूँ। दुर्बलता के कारण मेरा शरीर वृक्ष के भांति हिलता है। इस विरह की अग्नि में जल कर मैं राख बन जाउंगी और ये हवा मेरी राख को उड़ा ले जाएगी।

(घ) नागमती अपने शरीर को विरहाग्नि में में जला देना चाहती है। जलने के बाद उसका शरीर राख में परिवर्तित हो जायेगा। उसके बाद ये हवा उसकी राख को उदा कर उसके प्रियतम के मार्ग में बिखेर देगी जिस से वह अपने प्रियतम को स्पर्श कर सकेगी।

12:1:8:प्रश्न और अभ्यास:6

प्रथम दो छंदों में से अलंकार छाँटकर लिखिए और उनसे उत्पन्न काव्य-सौंदर्य पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर -

पहला पद -यह दुःख दगध न जानै कंतु । जोबन जरम करै भसमंतु।

पहली पद की भाषा अवधी है। शब्दों का सटीक वर्णन भाषा को प्रवाहमयी और गेय बनाती है। भाषा सरल और आसान है। इसमें 'दुःख-द्गध'तथा जोबर-जर में अनुप्रास अलंकार है । वियोग से उत्पन्न विरह का मार्मिक वर्णन किया गया है।

दूसरा पद -बिरह बाढ़ी भा दारुन सीऊ । कंपि- कंपि मरौं लेहि हरी जीऊ ।

इस पद की भाषा अवधी है। शब्दों का सटीक वर्णन भाषा को प्रवाहमयी और गेय बनाती है। भाषा सरल और आसान है। 'बिरह बाढ़ी'में अनुप्रास अलंकार तथा 'कंपि- कंपि'में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है। पूस माह की ठण्ड का सजीव वर्णन किया गया है ।

12:1:8:प्रश्न और अभ्यास:2

किसी अन्य कवि द्वारा रचित विरह वर्णन की दो कविताएँ चुनकर लिखिए और अपने अध्यापक को दिखाइए।

उत्तर - पदः मीराबाई

तोसों लाग्यो नेह रे प्यारे नागर नंदकुमार।
मुरली तेरी मन हरह्यौ बिसरह्यौ घर ब्यौहार।।
जबतैं श्रवननि धुनि परी घर अंगणा न सुहाय।
पारधि ज्यूं चूकै नहीं म्रिगी बेधि द आय।।
पानी पीर न जान ज्यों मीन तडफ मरि जाए।
रसिक मधुपके मरमको नहीं समुझत कमल सुभाय।।
दीपक को जो दया नहिं उडि उडि मरत पंतग।
मीरा प्रमु गिरधर मिले जैसे पाणी मिलि गयौ रंग।।

पदः मीराबाई

निसि दिन बरषत नैन हमारे।
सदा रहति बरषा रितु हम पर जब तें स्याम सिधारे।।
दृग अंजन न रहत निसि बासर कर कपोल भए कारे।
कंचुकि पद सूखत नहिं कबहूं उर बिच बहत पनारे।।
आंसू सलिल भई सब काया पल न जात रिस टारे।।
सूरदास प्रभु यहै परेखो गोकुल काहें बिसारे।।